

सम्पादकीय

गुरिंदरवीर सिंह के दिल में गांव और साधारण परिवारों में पले–बढ़े बच्चों के संघर्ष के प्रति खासा सम्मान है। वे उन हजारों नवोदित खिलाड़ियों के लिये प्रेरणापुंज हैं जो अपनी पृष्ठभूमि वाले एक खिलाड़ी को राष्ट्रीय फलक पर चमकता देख रहे हैं। निश्चय ही इस कामयाबी से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। रही वजह है कि इस ऐतिहासिक कामयाबी से पहले जालंधर की महिला खिलाड़ियों...

गुरिंदरवीर की रिकॉर्ड दौड़ ने बढ़ाया राष्ट्रीय गौरव

एक प्रेरक कहावत है कि सुबह जिसकी हुई, सचमुच वो सारी रात नहीं सोया होगा। आज जब हम पंजाब के पुत्र गुरिंदरवीर सिंह की रिकॉर्ड तोड़ कामयाबी की बात कर रहे हैं तो हमें इस मुकाम तक पहुंचने के उसके संघर्ष को भी याद करना चाहिए। कोई भी कामयाबी रातों–रात नहीं मिलती। महज 10.09 सेकंड में सौ मीटर की रेस पूरी करने वाले गुरिंदरवीर सिंह ने, निस्संदेह नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाकर देशवासियों को गर्व करने का मौका दिया है। निर्विवाद रूप से उनके भारत के सबसे तेज धावक बनने की कहानी महज चंद घड़ियों की बदौलत नहीं नापी जा सकती। गांव की धूल से भरी सड़कों में उनका अभ्यास, प्रशिक्षण मैदानों में पसीने के साथ थका देने वाला सफर और संसाधन के अभावों से जूझकर ही वे इस मुकाम तक पहुंचे हैं। वहीं इस कामयाबी में उनके परिवार का खामोश त्याग भी शामिल है, जो उनकी कामयाबी के बाद ही सुर्खियों में नजर आ पाया है। जालंधर के निकट स्थित पटियाल गांव के स्प्रिंट किंग गुरिंदरवीर सिंह ने रांची में फेडरेशन कप में जब सौ मीटर की दौड़ 10.09 सेकंड में पूरी की तो इस मुकाम तक पहुंचने वाले वे पहले भारतीय थे। एक नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बना। इस इतिहास को रचकर गुरिंदरवीर सिंह देश के सर्वश्रेष्ठ एथलीटों में शामिल हो गए हैं। इस सफलता का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि इस कामयाबी के बाद वे स्वतरु ही राष्ट्रमंडल खेलों में खेलने के हकदार हो गए हैं। उन्होंने राष्ट्रमंडल खेलों में एक ओर पदक जीतने की उम्मीद फिर से जगा दी है। उल्लेखनीय है कि स्प्रिंट किंग गुरिंदरवीर का सौ मीटर की दौड़ पूरी करने का यह समय इस सीजन में एशिया का दूसरा सबसे तेज समय है। वे जापान के फुकुतो कोमुरो से महज .01 सेकेंड ही पीछे रहे हैं। विश्वास करना चाहिए कि भविष्य में गुरिंदरवीर सिंह नये मुकाम हासिल करेंगे। यह विरोधाभास ही है कि जब कोई खिलाड़ी रिकॉर्ड कामयाबी हासिल करता है तो हम उसे पलक–पावड़ों पर बैठा देते हैं। मान–सम्मान और पुरस्कार देते हैं। लेकिन यदि छोटी उम्र में ही प्रतिभा को पहचान करके उसे पर्याप्त संसाधन व प्रशिक्षण प्रदान करें

तो देश में कई गुरिंदरवीर तैयार हो सकते हैं। गुरिंदरवीर सिंह की इस कामयाबी के पीछे कई प्रेरणादायक कहानियां भी निहित हैं। उनका मानवीय पहलू हमारे समाज की सकारात्मक ऊर्जा को दर्शाता है। उनके पिता ने अपने बेटे को दौड़ के अभ्यास हेतु भेजने के लिये किश्तों में एक पुराना स्कूटर खरीदा था। जो बताता है कि एक तरफ क्रिकेट खिलाड़ियों पर लाखों–करोड़ों वारे जाते हैं तो दूसरी ओर परंपरागत खेलों से जुड़े खिलाड़ियों का संघर्ष कितना बड़ा है। वहीं गुरिंदरवीर सिंह को तराशने–निखारने की यात्रा में भारतीय नौसेना के योगदान को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। जिसने गुरिंदरवीर सिंह को ट्रैक पर उक्तुष्ट सफलता हासिल करने हेतु संबल दिया। निस्संदेह, गांव–कस्बों से निकलने वाली प्रतिभाओं की कामयाबी के पीछे सीमित संसाधनों वाले माता–पिता के दृढ़ संकल्प और त्याग की कहानी छिपी रहती है। गुरिंदरवीर सिंह जैसे राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाने वाले खिलाड़ी के पीछे एक परिवार शिदत के साथ खड़ा होता है, जो उसके सुनहरे भविष्य के लिये अपनी सुख–सुविधा, बचत व आर्थिक सुरक्षा तक त्याग कर देता है। गुरिंदरवीर सिंह के दिल में गांव और साधारण परिवारों में पले–बढ़े बच्चों के संघर्ष के प्रति खासा सम्मान है। वे उन हजारों नवोदित खिलाड़ियों के लिये प्रेरणापुंज हैं जो अपनी पृष्ठभूमि वाले एक खिलाड़ी को राष्ट्रीय फलक पर चमकता देख रहे हैं। निश्चय ही इस कामयाबी से उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। यही वजह है कि इस ऐतिहासिक कामयाबी से पहले जालंधर की महिला खिलाड़ियों से उनका संवाद बेहद सहज–सरल व प्रेरणादायक था कि तुम्हें भी एकदिन यहां पहुंचना है। निश्चय ही उनका यह कथन नवोदित प्रतिभाओं में नई ऊर्जा का संचार करने वाला है। निस्संदेह, विगत में भी पंजाब ने कई ऐसे खेल नायकों को जन्म दिया, जिन्होंने अभावों से जूझते हुए दृढ़ संकल्प से कामयाबी की नई इबारत लिखी। फलाइंग सिख मिल्खा सिंह से लेकर जालंधर एक्सप्रेस गुरिंदरवीर की कामयाबी उसकी गवाह है। जो नई पीढ़ी के खिलाड़ियों को बड़े सपने देखने को प्रेरित करती है।

पर्यावरण पर गंभीर है प्रिंट मीडिया, टीवी नहीं

मीडिया विश्लेषकों मानते हैं कि टीवी चैनलों में ‘टीआरपी–चालित पत्रकारिता’ के कारण पर्यावरणीय रिपोटिंग कमजोर हुई है। पर्यावरणीय मुद्दे प्रायः जटिल, दीर्घकालिक और शोध–आधारित रिपोटिंग की मांग करते हैं, जबकि टीवी मीडिया त्वरित दृश्य प्रभाव और राजनीतिक टकराव को प्राथमिकता देता है। इसके कारण पर्यावरणीय सरोकारों व विस्थापन के मुद्दे मीडिया एजेंडा में अपेक्षाकृत पीछे रह जाते हैं...

पर्यावरणीय आंदोलनों से जुड़े घटनाक्रम राष्ट्रीय–क्षेत्रीय समाचार पत्र अधिक संतुलित, तथ्यपरक और विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं, जबकि टीआरपी–आधारित प्रतिस्पर्धा के कारण टीवी समाचार चैनल राजनीतिक बहस, चुनावी बयानबाजी, अपराध व मनोरंजक खबरों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। पिछले कुछ वर्षों में बढ़ते तापमान, वायु प्रदूषण, जल संकट, जंगलों में आग, असमय वर्षा, हिमालयी भू–स्खलन और शहरी पर्यावरणीय अव्यवस्था जैसी समस्याओं ने जनजीवन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। साथ ही, जंगल कटान, खनन परियोजनाएं, नदी जोड़ो योजनाएं, आदिवासी विस्थापन और जैव विविधता पर बढ़ते खतरे देशभर में व्यापक जनआंदोलनों का कारण बने हैं। पर्यावरणीय आंदोलनों की मीडिया कवरेज को लेकर गंभीर प्रश्न उठे हैं। राष्ट्रीय–क्षेत्रीय समाचार पत्र इन मुद्दों को अधिक संतुलित, तथ्यपरक और विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं, जबकि टीआरपी–आधारित प्रतिस्पर्धा के कारण टीवी समाचार चैनल राजनीतिक बहस, चुनावी बयानबाजी, अपराध व मनोरंजनक खबरों को अधिक प्राथमिकता देते हैं। चूंकि पर्यावरणीय विषय गहन शोध I, फील्ड रिपोर्टिंग और दीर्घकालिक विश्लेषण की मांग करते हैं, अतः इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में इन्हें अपेक्षित समय–संसाधन नहीं मिले।

मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश से जुड़ी केनदू बेतवा रिवर लिंक परियोजना लगभग 44 हजार करोड़ रुपये की एक बड़ी जल संसाध



न योजना है। इसका उद्देश्य केन नदी के अतिरिक्त जल को बेतवा बेसिन तक पहुंचाकर पानी की कमी वाले क्षेत्रों में सिंचाई, पेयजल आपूर्ति और जलविद्युत उत्पादन को बढ़ावा देना है। हालांकि, परियोजना को लेकर कई गंभीर चिंताएं भी सामने आई हैं, जिनमें हजारों लोगों का विस्थापन, वन भूमि का जलमग्न होना तथा पन्ना टाइगर रिजर्व की जैव विविधता पर संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं। वहीं छतरपुर और पन्ना जिलों में प्रभावित ग्रामीणों और आदिवासी समुदायों ने विरोध के विभिन्न प्रतीकात्मक तरीके अपनाए। प्रदर्शनकारियों ने संदेश देने का प्रयास किया कि विस्थापन उनके सामाजिक

अस्तित्व को समाप्त कर देगा। राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने इस आंदोलन को मानवीय और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से विस्तारपूर्वक कवर किया। दूसरी ओर, अधिकांश टीवी चैनलों पर यह मुद्दा सीमित समाचार पैकेजों तक सिमटता दिखाई दिया। इसी प्रकार ओडिशा के रायगढ़ा और कालाहांडी जिलों में प्रस्तावित वेदांता समूह की बॉक्साइट खनन परियोजना के खिलाफ स्थानीय आदिवासी समुदायों का विरोध मीडिया कवरेज में

स्थानीय आदिवासी समुदाय लंबे समय से खनन परियोजनाओं के खिलाफ विरोध दर्ज करा रहे हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार हजारों पेड़ों पर खनन परियोजनाओं का प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन इसके बावजूद राष्ट्रीय टीवी चैनलों पर इस संघर्ष को लगातार कवरेज नहीं मिली। इसी प्रकार राजस्थान के शाहबाद वन क्षेत्र में पंप्ड स्टोरेज परियोजना के लिए पेड़ों की कटाई के खिलाफ पर्यावरण कार्यकर्ता लगातार आवाज उठा रहे हैं। अरावली क्षेत्र और वन संरक्षण से जुड़े मुद्दों पर कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्रों तथा डिजिटल मीडिया संस्थानों ने इस संघर्ष को जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और आदिवासी अधिकारों के संदर्भ में प्रमुखता से प्रकाशित किया। हिमालयी क्षेत्रों में बढ़ते पर्यावरणीय संकट को लेकर 'हिमालय है तो हम हैं' अभियान के तहत पर्यावरणविदों, वैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और एक्टिविस्टों ने भी आवाज उठाई। इस अभियान का उद्देश्य हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को अंधाधुंध निर्माण, सड़क चौड़ीकरण, जलविद्युत परियोजनाओं और अनियंत्रित पर्यटन से होने वाले नुकसान के प्रति जागरूकता फैलाना है। बुंदेलखंड क्षेत्र में महिलाओं द्वारा संचालित 'जल सहेली' अभियान भी पर्यावरणीय जनभागीदारी का उल्लेखनीय उदाहरण है, लेकिन मुख्यधारा टीवी चैनलों पर इसकी उपस्थिति सीमित रही।

ऊर्जा सुरक्षा की तुलना चीन से करें, तो पाएंगे कि चीन ने अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ समय रहते उठा लिया है। भारत, जहां लगभग पूरी तरह से समुद्री पोतों से आने वाली एलएनजी पर निर्भर है, वहीं चीन ने व्यवस्थित रूप से भूमि और क्षेत्रीय पाइपलाइन गलियारों का एक नेटवर्क बना लिया है। इसके कारण वह होर्मुज पाइपलाइन के व्यवधान से काफी हद तक सुरक्षित हो गया है। चीन की ...

मिडिल–ईस्ट–इंडिया डीप–वाटर पाइपलाइन अरब सागर के नीचे लगभग 2,000 किलोमीटर तक लंबी होगी, जो ओमान को भारत के गुजरात तट से जोड़ेगी। इस परियोजना से भारत को ओमान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, ईरान, तुर्कमेनिस्तान और कतर से गैस आपूर्ति प्राप्त करने में मदद मिलेगी। होर्मुज जलसंधि का रास्ता बंद होने और भारत में ऊर्जा–संकट के बादल गहराने से जुड़ी खबरों के बीच एक खबर को ज्यादा सुर्खियां नहीं मिल पाई कि भारत, गहरे समुद्र में एक गैस पाइपलाइन परियोजना पर विचार कर रहा है, जो हमें ओमान से जोड़ेगी। भारत सरकार ने अब इस पर तेजी से काम करना शुरू किया है। हाल में कुछ मीडिया स्रोतों ने पेट्रोलियम मंत्रालय के एक अधिकारियों को उद्धृत करते हुए खबर दी है कि मंजूरी मिली, तो करीब 4.8 अरब डॉलर की लागत से बनने वाली परियोजना खाड़ी क्षेत्र से निर्बाध गैस आपूर्ति सुनिश्चित करेगी। परियोजना को समय से हरी झंडी मिली, तब भी इसे पूरा होने में पांच से सात साल लगेंगे। उसके पहले इसके सभी आर्थिक और तकनीकी पहलुओं पर विचा

करना भी जरूरी होगा। सेज' ने प्रस्तावित मार्ग पर लगभग 3,000 मीटर परीक्षण पाइपलाइन बिछाकर प्रारंभिक चरण का तकनीकी सत्यापन कर लिया है, जिस पर लगभग 25 करोड़ रुपये की लागत आई है। यह पाइपलाइन इंजीनियरों के लिए चुनौती भी होगी, क्योंकि कुछ जगहों पर यह करीब साढ़े तीन किलोमीटर तक की गहराई पर बिछानी पड़ेगी, जो अब तक समुद्र के नीचे बिछाई गई दुनिया की किसी भी पाइपलाइन की तुलना में चार गुना अधिक गहरी होगी। इस अध्ययन का उद्देश्य समुद्र तल की स्थितियों का आकलन करना और इंजीनियरिंग संभावनाओं की पुष्टि करना है। संभावना है कि भारत का पेट्रोलियम मंत्रालय, सरकारी कंपनियों गेल, इंजीनियर्स इंडिया और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन को विस्तृत व्यवहार्यता रिपोर्ट तैयार करने का निर्देश देगा। रिपोर्ट सकारात्मक हुई, तो ओमान



के साथ गैस आपूर्ति, वित्तपोषण और परियोजना कार्यान्वयन पर औपचारिक बातचीत का रास्ता खुलेगा। पश्चिम एशिया से भारत तक समर्पित पाइपलाइन बनी, तो हम किसी ट्रांजिट देश या समुद्री अवरोध बिंदु पर निर्भर नहीं रहेंगे और किकायती लागत पर गैस की आपूर्ति लगातार जारी रहेगी। मिडिल–ईस्ट–इंडिया डीप–वाटर पाइपलाइन (एमईआईडीपी) अरब सागर के नीचे लगभग 2,000 किलोमीटर तक लंबी होगी, जो ओमान को भारत के गुजरात तट से जोड़ेगी। इस परियोजना से भारत को

ऊर्जा की नई किरण भारत–ओमान समुद्री पाइपलाइन

ओमान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, ईरान, तुर्कमेनिस्तान और कतर से गैस आपूर्ति प्राप्त करने में मदद मिलेगी। वर्ष 2025 में भारत के एलएनजी आयात का लगभग दो–तिहाई हिस्सा होर्मुज जलसंधि से होकर गुजरा था। इस साल फरवरी के अंत में होर्मुज संकट शुरू होने के बाद, वैश्विक एलएनजी आपूर्ति में 20 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आई, जिससे कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई। इस गिरावट के कारण भारत के उर्वरक संयंत्रों, बिजलीघरों और उद्योगों की आपूर्ति में अचानक लगे झटकों ने चिंता पैदा की है। खनिज तेल की ऊंची कीमतों ने आयात लागत को पहले ही बढ़ा दिया है। इस पृष्ठभूमि में, टैंकरों पर निर्भरता को कम करने और प्राकृतिक गैस का स्थिर प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए दशकों पुरानी इस परियोजना को पुनर्जीवित किया जा सकता है। इस परियोजना से प्रतिदिन लगभग 31 मिलियन मानक घन मीटर (एमएमएससीएमडी) प्राकृतिक गैस की आपूर्ति होने की उम्मीद है। वर्तमान राष्ट्रीय गैस खपत लगभग 190 से 195 मिलियन मानक घन मीटर प्रतिदिन है, जो औद्योगिक और शहरी गैस नेटवर्क के विस्तार और उर्वरक क्षेत्र की मांग में वृद्धि पर भी निर्भर है। 2030 तक, यह मांग 290 से 300 मिलियन वर्ग मीटर प्रतिदिन तक पहुंचने का अनुमान है। भारत को खाड़ी देशों से जोड़ने वाली समुद्री पाइपलाइन की अवधारणा नई नहीं है। 1990 के दशक से इस प्रस्ताव के विभिन्न रूप

समय–समय पर सामने आते रहे हैं, लेकिन द्विपक्षीय वार्ता की जटिलता, वित्तपोषण की अनिश्चितता और अपर्याप्त राजनीतिक उत्साह के कारण वे ठंडे बस्ते में चले गए। बहरहाल इसबार की पहल तीन कारणों से उत्साहवर्क है। एक, समुद्र में पाइप बिछाने की तकनीक में काफी प्रगति हुई है। पर्याप्त भू–राजनीतिक झटकों की वजह से राजनीतिक इच्छाशक्ति पैदा हो गई है, और तीसरे, सरकारी संस्थाओं को काम के औपचारिक निर्देश मिले हैं। यह परियोजना अब केवल सैद्धांतिक मनोकामना नहीं है, बल्कि सक्रिय इंजीनियरिंग और डिप्लोमैटिक प्रयास है। इस पाइपलाइन की संरचना से भारत को ओमान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, ईरान, तुर्कमेनिस्तान और कतर से प्राकृतिक गैस प्राप्त करने का अवसर मिल सकता है। इन देशों के पास सामूहिक रूप से लगभग 2,500 ट्रिलियन घन फुट प्राकृतिक गैस का भंडार है। कतर के पास लगभग 868 ट्रिलियन घन फुट और ईरान के पास लगभग 1,649 ट्रिलियन घन फुट का भंडार है। भारत की

ऊर्जा सुरक्षा की तुलना चीन से करें, तो पाएंगे कि चीन ने अपनी भौगोलिक स्थिति का लाभ समय रहते उठा लिया है। भारत, जहां लगभग पूरी तरह से समुद्री पोतों से आने वाली एलएनजी पर निर्भर है, वहीं चीन ने व्यवस्थित रूप से भूमि और क्षेत्रीय पाइपलाइन गलियारों का एक नेटवर्क बना लिया है। इसके कारण वह होर्मुज पाइपलाइन के व्यवधान से काफी हद तक सुरक्षित हो गया है। चीन की पावर ऑफ साइबरिया पाइपलाइन, जो दिसंबर, 2019 से चालू है, पूरी क्षमता से रूस के साइबेरिया गैस क्षेत्रों से प्रति वर्ष 38 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) तक गैस की आपूर्ति करती है।



कराया गया था। इस कार्रवाई के बाद भी एजेंसी संचालन में सुधार न होने से विभागीय कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं।2800 उपभोक्ताओं की बुकिंग दूसरी एजेंसी में ट्रांसफर लगातार मिल रही शिकायतों और अनियमितताओं को देखते हुए प्रशासन ने मंगलम गैस एजेंसी के करीब 2800 उपभोक्ताओं की गैस बुकिंग दूसरी एजेंसी में ट्रांसफर कर दी है।अधिकारियों का कहना है कि एजेंसी के खिलाफ लगातार शिकायतें मिल रही थीं,जिसके चलते कार्रवाई की गई।डीएसओ की कार्यशैली पर भी उठे सवाल स्थानीय लोगों का आरोप है कि लंबे समय से एजेंसी पर उपभोक्ताओं के शोषण,गैस वितरण में मनमानी, कालाबाजारी और अभद्र व्यवहार की शिकायतें होती रही हैं, लेकिन

पयागपुर में अधिवक्ताओं का प्रदर्शन, तहसीलदार को सौंपा ज्ञापन

दैनिक बुद्ध का संदेश
पयागपुर /बहराइच। लखनऊ बार एसोसिएशन के अधिवक्ताओं के चौबर तोड़े जाने तथा शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे अधिवक्ताओं पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में शुक्रवार को पयागपुर तहसील में अधिवक्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान अधिवक्ता साथियों ने एकजुट होकर अपनी नाराजगी जताई और तहसीलदार पयागपुर को ज्ञापन सौंपा। अधिवक्ताओं ने कहा कि अधिवक्ता समाज न्याय व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्तंभ है और उनके सम्मान एवं अधिकारों की रक्षा होना आवश्यक है। प्रदर्शन के दौरान अधिवक्ताओं ने घटना की निंदा करते हुए दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। कार्यक्रम के अंत में अधिवक्ताओं ने “अधिवक्ता एकता जिंदाबाद” के नारे लगाए और कहा कि अधिवक्ता समाज अपने अधिकारों की रक्षा के लिए हमेशा एकजुट रहेगा।

भीषण गर्मी में सोनौली पुलिस की पहल, शुरु किया जनता प्याऊ



निरीक्षक महेंद्र मिश्रा ने कहा कि गर्मी के मौसम में लोगों को राहत पहुंचाना पुलिस की प्राथमिकता है। पुलिस की इस जनहित पहल की स्थानीय लोगों ने सराहना की है।

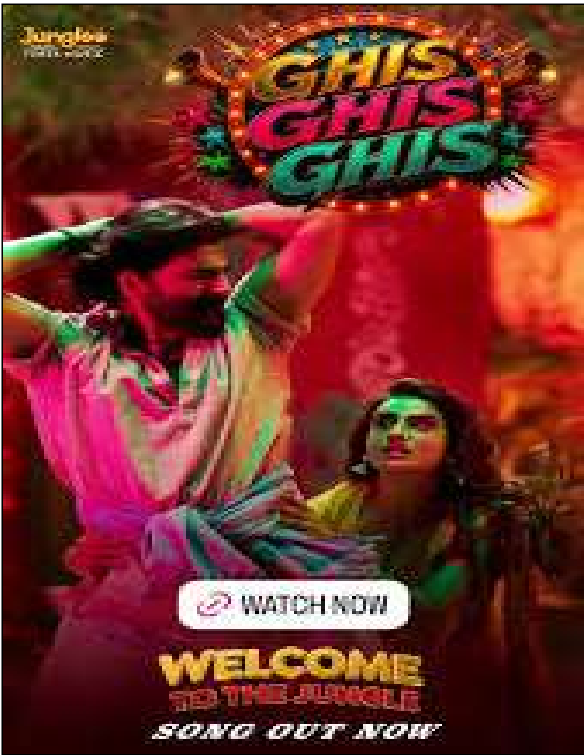
जनपद में रंग ला रहा 100 दिवसीय टीबी खोज अभियान, दो महीने में मिले 1,686 नए मरीज

दैनिक बुद्ध का संदेश
बहराइच। जनपद में 24 मार्च से चल रहा 100 दिवसीय विशेष टीबी खोज अभियान अब असर दिखाने लगा है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान के तहत अब तक 12,754 बिना लक्षण वाले लोगों का डिजिटल एक्स–रे कराया गया, जिसमें 66 ऐसे लोगों में टीबी की पुष्टि हुई जिन्हें खुद भी बीमारी की जानकारी नहीं थी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. संजय कुमार ने बताया कि शुरुआती चरण में टीबी अक्सर बिना खांसी या बुखार जैसे लक्षणों के भी फेफड़ों को नुकसान पहुंचाती रहती है। ऐसे में समय पर जांच और पहचान बेहद जरूरी है। उन्होंने लोगों से अपील की कि स्वास्थ्य विभाग द्वारा लगाए जा रहे शिविरों में नि:शुल्क जांच अवश्य कराएं। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. एमएल वर्मा के अनुसार जिले में प्रस्तावित 350 विशेष शिविरों में से अब तक 152 शिविर आयोजित किए जा चुके हैं। इन शिविरों के माध्यम से 66 बिना लक्षण वाले मरीजों के अलावा 1,620 अन्य लोगों में भी टीबी की पुष्टि हुई है। बीते दो महीनों में कुल 1,686 नए मरीजों की पहचान कर इलाज शुरू कर दिया गया है। अभियान के तहत कुपोषित बच्चों, मलिन बरिस्तयों में रहने वाले लोगों, मजदूरों, मुधुमेह रोगियों, बुजुर्गों और पूर्व टीबी मरीजों जैसे संवेदनशील वर्गों की विशेष जांच की जा रही है। वर्तमान में जिले में करीब 6,000 टीबी मरीज उपचारधीन हैं, जिन्हें नियमित दवा और पोषण सहायता उपलब्ध कराई जा रही है।

होश उड़ गए। घटना की सूचना मिलते ही आसपास के लोगों की भीड़ मौके पर जमा हो गई। पीड़ित व्यापारी आरिफ ने तत्काल कटरा बाजार थाने को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने मौके का निरीक्षण कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी

कैमरों और संदिग्ध लोगों की गतिविधियों की जानकारी जुटाने में लगी है। इस संबंध में कटरा बाजार थाने के अतिरिक्त प्रभारी निरीक्षक कमलाकांत त्रिपाठी ने बताया कि चोरी की सूचना प्राप्त हुई है। पीड़ित परिवार की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि घटना का ख़ुलासे के लिए कई पुलिस टीमें गठित की गई हैं और जल्द ही आरोपियों को गिरतार कर जेल भेजा जाएगा।

वेलकम 3 में भोजपुरी तड़का, अक्षय कुमार और अक्षरा सिंह ने धमाकेदार गाने घिस-घिस-घिस से उड़ाया गर्दा



दृश्यम 3 बॉक्स ऑफिस: संडे को छाई मोहनलाल की क्राइम थ्रिलर, पहले वीकेंड 150 करोड़ के करीब पहुंची कमाई



साउथ सुपरस्टार मोहनलाल और निर्देशक जीतू जोसेफ की मलयालम क्राइम थ्रिलर फिल्म दृश्यम 3 ने अपने पहले वीकेंड जबरदस्त कमाई की है. वहीं, फिल्म के पहले रविवार को इसके कलेक्शन में मामूली उछाल देखने को मिला. फिल्म ट्रेड वेबसाइट सैकनलिक के अनुसार, फिल्म ने भारत में चौथे दिन शानदार कलेक्शन किया है. इसी के साथ मोहनलाल की फिल्म अपने पहले ही वीकेंड वर्ल्डवाइड 150 करोड़ रुपये के करीब पहुंच चुकी है. सैकनलिक के अनुसार, मोहनलाल की क्राइम थ्रिलर ने अपने पहले संडे यानी चौथे दिन भारत में 13.95 करोड़ रुपये की कमाई की है. इससे फिल्म का घरेलू कलेक्शन 54.55 करोड़ रुपये का हो गया है. फिल्म के लिए केरल सबसे मजबूत बाजार बना रहा. अकेले केरल राज्य ने रविवार को 9.70 करोड़ रुपये का

नेट कलेक्शन किया. शनिवार को फिल्म ने पूरे भारत में 13.70 करोड़ रुपये कमाए थे. मलयालम में कुल कमाई में अपना दबदबा कायम रखा और 3,186 शो से 69.35 प्रतिशत ऑक्व्यूप्सी के साथ 11.75 करोड़ रुपये कमाए. तेलुगु संस्करण ने 1.20 करोड़ रुपये का योगदान दिया, जबकि तमिल और कन्नड़ संस्करणों ने क्रमशः 65 लाख रुपये और 35 लाख रुपये का योगदान दिया. रविवार को सभी भाषाओं में फिल्म के 5,270 शो प्रदर्शित किए गए. दृश्यम 3 ने पहले दिन 15.85 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन किया था और दूसरे दिन 11.05 करोड़ रुपये कमाए थे. रविवार को हुई इस बढ़ोतरी ने फिल्म को अपने पहले वीकेंड में भारतीय बॉक्स ऑफिस पर कमाई की लय बनाए रखने में मदद की है. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस थ्रिलर फिल्म ने शानदार प्रदर्शन किया है. फिल्म की कुल वैश्विक कमाई 141.34 करोड़ रुपये है, जिसमें भारत से 63.34 करोड़ रुपये और विदेशों से 78 करोड़ रुपये शामिल हैं. खाड़ी देशों, उत्तरी अमेरिका और यूरोप के दर्शकों ने फिल्म की विदेशी कमाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. जीतू जोसेफ द्वारा निर्देशित, दृश्यम 3 में मोहनलाल जॉर्जकुट्टी के रूप में अपनी भूमिका को दोहराते हैं. फिल्म में सिद्दीकी, मुरली गोपी, बीजू मेनन और कलाभवन शार्जॉन के साथ मीना, अंसिबा हसन और एस्तेर अनिल भी हैं.

फिल्म कॉकटेल 2 से दूसरा गाना माशूका जारी, शाहिद-कृति की केमिस्ट्री जीत लेगी दिल

तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया (2024) के बाद, शाहिद कपूर और कृति सैनन की जोड़ी फिर लौट रही है। दोनों आगामी फिल्म कॉकटेल 2 में नजर आएंगे, जिसमें रश्मिका मंदाना भी मुख्य किरदार में हैं। मैडॉक फिल्म्स द्वारा निर्मित यह फिल्म 19 जून को सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है। पिछले महीने अरिजीत सिंह की आवाज में पहला गाना जब तलक जारी हुआ था, जिसे जनता का बेहद प्यार मिला। अब दूसरा गाना माशूका जारी किया गया है।



भट्टाचार्या ने संगीत दिया है।संगीत का काम प्रीतम चक्रवर्ती ने संभाला है। गाने के दृश्य शाहिद और कृति के ऊपर फिल्माए गए हैं, और दोनों की रोमांटिक केमिस्ट्री देखने लायक है। जोशीले संगीत और फुल वाइब्स वाला यह गाना लोगों को बेहद पसंद आ रहा है। बता दें, फिल्म का निर्देशन होमी अदजानिया ने किया है। डिंपल कपाडिया भी फिल्म में नजर आ सकती हैं। कॉकटेल 2 की कहानी पिछली फिल्म का विस्तार नहीं है, बल्कि यह नए किरदारों के साथ आधुनिक समय के रिश्तों, दोस्ती और भावनाओं के उतार-चढ़ाव को दिखाएगी। फिल्म एक रोमांचक रोड ट्रिप पर आधारित है, जिसकी शूटिंग इटली के सिसिली के अलावा दिल्ली और गुरुग्राम जैसे शहरों में की गई है। मैडॉक फिल्म्स द्वारा निर्मित इस फिल्म को लव रंजन ने लिखा है और निर्देशन की कमान होमी अदजानिया ने संभाली है। कॉकटेल 2 सिनेमाघरों में 19 जून, 2026 को दस्तक देने वाली है। हालांकि, इसकी राह आसान नहीं होगी क्योंकि इसी दौरान कई बड़ी फिल्में रिलीज हो रही हैं। यह फिल्म यश की टॉक्सिक के 15 दिन बाद और दिलजीत दोसांझ की फिल्म के ठीक एक हफ्ते बाद आएगी। साथ ही, वरुण धवन की हाय जवानी तो इश्क होना है से भी इसका कड़ा मुकाबला होने की उम्मीद है। दिलचस्प बात यह भी है कि रश्मिका मंदाना के लिए यह विजय देवरकोंडा के साथ उनकी शादी के बाद का पहला बड़ा प्रोजेक्ट होगा। अब देखना यह है कि क्या यह नई कॉकटेल पुरानी फिल्म जैसा जादू दोबारा बिखेर पाती है या नहीं।

गर्मियों में पसीने की वजह से हो जाती है घमोरी? बचाव के लिए अपनाएं ये सुझाव



गर्मियों में सबसे ज्यादा परेशान करता है पसीना, जो उमस की वजह से बहुत बढ़ जाता है। ज्यादा पसीना निकलने के कारण त्वचा पर घमोरियां हो सकती हैं। इस समस्या की वजह से त्वचा पर लाल दाने, खुजली या जलन होती है। इसके उत्पन्न होने पर तो डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। हालांकि, अगर आप घमोरियों से बचना चाहते हैं तो इन 5 टिप्स का पालन करें। इनके जरिए आपका स्वास्थ्य सही रहेगा और आपको ज्यादा पसीना भी नहीं आएगा।

ढीले-ढाले सूती कपड़े पहनें: गर्मियों में ढीले-ढाले कपड़े पहनना सबसे अच्छा होता है। तंग कपड़े पहनने से पसीना निकलने की जगह नहीं मिलती, जिससे घमोरियां हो सकती हैं। सूती कपड़े इस मौसम में सबसे अच्छे होते हैं, क्योंकि ये त्वचा को हवा लगने देते हैं और पसीने को सोख लेते हैं। इसके अलावा ढीले कपड़े पहनने से त्वचा को आराम मिलता है और गर्मी से होने वाली जलन से बचाव होता है। इसलिए, हमेशा सूती और ढीले कपड़े ही पहनें।

रोजाना नहाएं: रोजाना नहाना एक अच्छी आदत है, जो गर्मियों के दौरान खासतौर से जरूरी है। इससे न केवल शरीर की गंदगी दूर होती है, बल्कि पसीने के कारण होने वाली घमोरियों से भी छुटकारा मिलता है। नहाने के लिए हल्का गुनगुना पानी इस्तेमाल करें और साबुन की जगह हल्के जेल या फोम का उपयोग करें। इससे आपकी त्वचा साफ रहेगी और तरोताजा महसूस होगा। इसके अलावा नहाने के बाद त्वचा को अच्छी तरह से सुखाना न भूलें।

त्वचा को नमी दें: नहाने के बाद त्वचा पर मॉइस्चराइजर लगाना जरूरी है। यह न केवल त्वचा को नमी देता है, बल्कि उसे मुलायम भी रखता है। इसके लिए हल्का और बिना खुशबू वाला मॉइस्चराइजर चुनें, जो आपकी त्वचा के प्रकार के अनुसार हो। इससे घमोरी होने की संभावना कम होती है और त्वचा पर ताजगी बनी रहती है। नियमित रूप से मॉइस्चराइजर लगाने से त्वचा की नमी बरकरार रहती है और वह स्वस्थ दिखती है।

धूप से बचाव करें: सूरज की हानिकारक किरणें भी घमोरी का कारण बन सकती हैं, इसलिए बाहर जाने से पहले अपनी त्वचा पर धूप से बचाव करने वाली क्रीम लगाएं। यह आपकी त्वचा को धूप से बचाती है और जलन होने से रोकती है। हर 2-3 घंटे बाद इसे दोबारा लगाना न भूलें, खासकर अगर आप लंबे समय तक बाहर रह रहे हैं। इसके अलावा सूरज की सीधी किरणों से बचने के लिए टोपी या छाते का इस्तेमाल करें।

पानी पीते रहें: शरीर को हाइड्रेट रखना जरूरी है, ताकि पसीना आसानी से निकल सके और शरीर ठंडा रहे। दिनभर में कम से कम 8-10 गिलास पानी पीएं और नारियल पानी, ताजे फलों का रस या इलेक्ट्रोलाइट पेय भी शामिल करें। इससे शरीर में पानी की कमी नहीं होगी और घमोरियां होने की संभावना कम होगी। इसके अलावा हाइड्रेट रहने से ऊर्जा बनी रहती है और थकान महसूस नहीं होती। अगर इन सबके बाद भी घमोरियां हो जाएं तो डॉक्टर से परामर्श करें।